इकाई 2 संसाधन सम्पन्नता और सामाजिक एवं आर्थिक संरचनाओं पर उसका प्रभाव – I

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 पैम्पास एवं इसका आर्थिक और सामाजिक प्रभावः अर्जेन्टीना

- 2.2.1 अर्जेन्टीनयाई पैम्पासः अर्थ और मुख्य विशेषताएँ
- 2.2.2 पैम्पास की महत्वपूर्ण विशेषताएँ
- 2.2.3 आर्थिक और सामाजिक प्रभाव
- 2.2.4 पैम्पास ने अपनी शान क्यों खोई?
- 2.2.5 उच्च दबाव और उसका प्रभाव

2.3 'उत्कर्ष और अपकर्ष' चक्रः ब्राज़ील

- 2.3.1 आर्थिक चक्र की मुख्य विशेषताएँ
- 2.3.2 आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं पर प्रभाव

2.4 खनिज पदार्थों का महत्वः चिली

- 2.4.1 ताम्र और स्वर्ण खनन काल
- 2.4.2 नाइट्रेट उद्योगः उत्कर्ष और अपकर्ष काल
- 2.4.3 आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं पर प्रभाव

2.5 सारांश

2.6 अभ्यास प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों को कुछ चुने हुए लैटिन अमेरिकी देशों – अर्जेन्टीना, ब्राज़ील और चिली की ऐतिहासिक विकास प्रक्रिया में उनके संसाधनों की सम्पन्नता संवर्धन एवं दोहन, और मुख्यतः उनका आर्थिक एवं सामाजिक संरचनाओं पर पड़ने वाले महत्वपूर्ण प्रभाव के मूल्यांकन से भी अवगत करना है। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि 1850-1930 की अवधि में लेटिन अमेरिका के आर्थिक विकास की काफी चर्चा रही है तथा उसके संसाधनों के दोहन और उनका अर्थव्यवस्था एवं समाज पर पड़ने वाले प्रभावों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इन देशों में संसाधनों की सम्पन्नता के साथ आर्थिक विकास का स्वरूप इनके आकार, अवस्थिति, संसाधनों के उपयोग तथा ऐतिहासिक संपति जैसे तथ्यों के भी अनुकूल रहा है। फिर भी यह महत्वपूर्ण है कि इन देशों की भौगोलिक सीमा इन महत्वपूर्ण संसाधनों की पूरक रही है। महत्वपूर्ण संसाधनों की पूरकता के दो मुख्य प्रभाव रहे हैं: एक, इसका बाहरी क्षेत्र के विकास में प्रभाव देखा गया तथा दूसरे इसने राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में सहायता प्रदान की। इस प्रकार कुछ वर्षों के बाद इन देशों ने कच्चे माल और खाद्यान्न की मुख्यतः निर्यात के लिए व्यापक उत्पादन क्षमता प्राप्त कर ली।

जहाँ तक विदेशी पूंजी की भूमिका का सम्बंध है कुछ लोगों का तर्क है कि विदेशी निवेशकों विशेषकर ब्रिटेन और अमेरिकावासियों के लिए इन देशों ने या तो संसाधनों के विकास में प्रत्यक्ष रूप से अथवा रेलवे, सड़क और बंदरगाहों जैसे आधारभूत कार्यों में अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किए

जिससे संसाधनों का विकास संभव हुआ। फिर भी, सकारात्मक प्रभावों के विपरीत विदेशी पूंजी के विरोधी पक्षों का तर्क है कि यह विदेशी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था विकास का स्वरूप संपूर्ण अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने में असफल रहा और इसने अर्थव्यवस्था के एक स्तर में ही सुधार किया। इसके अतिरिक्त इन देशों में संसाधन विकास का प्रभाव सामाजिक, संस्थागत और भौतिक वातावरण के तथ्यों के कारण सीमित भी रहा।

उपर्युक्त के परिप्रेक्ष्य में यह इकाई इन तीन महत्वपूर्ण देशों में संसाधन संपन्नता के विकास तथा उसके सामाजिक और आर्थिक प्रभाव का मूल्यांकन प्रस्तुत करेगी। ये हैं: i) अर्जेन्टीनयाई पैम्पास और इसकी सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव, ii) ब्राज़ील में उन्नति और अवनति चक्र; और iii) चिली में खनिजों का महत्व।

2.2 पैम्पास एवं इसका आर्थिक और सामाजिक प्रभावः अर्जेन्टीना

अर्जेन्टीनयाई पैम्पास ने दक्षिणी-पूर्वी ब्राज़ील के साथ उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आर्थिक विकास के संदर्भ में सफलता-गाथाओं की घोषणा की। पैम्पास कैसे बना है? इसकी मुख्य विशेषताएँ क्या हैं? पैम्पास की सफलता गाथाओं के क्या कारण हैं और बाद में उनकी अवनति का क्या महत्व है? और सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न कि पैम्पास के आर्थिक और सामाजिक प्रभाव का अर्जेन्टीना पर क्या प्रभाव पड़ा? इकाई के इस भाग में इन प्रश्नों पर विचार किया गया है।

अर्जेन्टीना एक शीतोष्ण देश हैं जिसमें उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोपीय आप्रवासियों के आगमन से विकास हुआ, उन्होंने कृषि और आधारभूत परियोजनाओं तथा चर्म, माँस, ऊन, गेहूँ, मकई और अलसी आदि के निर्यातमूलक उत्पादन में अत्यधिक निवेश किया। निर्यात की सफलता में सहायता करने वाले पैम्पास के योगदान को आज भी स्वीकार किया जाता है।

2.2.1 अर्जेन्टीनयाई पैम्पासः अर्थ और मुख्य विशेषताएँ

भौगोलिक परिभाषा के अनुसार पैम्पास अर्जेन्टीना के पाँच प्रान्तों – ब्युनोस, ऐरिज, लॉपैम्पा, कारडोबा, सेंटाफी और ऐंट्रीराउस से मिलकर बना है।

समृद्ध कृषि संसाधनों से सम्पन्न अर्जेन्टीना की 90 प्रतिशत, अच्छी भूमि पैम्पास में है। इस क्षेत्र में अच्छे किस्म के पशु, अच्छी भूमि और राष्ट्रीय बाजारों की समीपता तथा निर्यात केन्द्र हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि पैम्पास में पारम्परिक फसलों के उत्पादनों में उर्वरकों का प्रयोग नहीं किया जाता है क्योंकि उत्पादकता को बनाए रखने के लिए जमीन में आवश्यक तत्त्व मौजूद रहते हैं।

अर्जेन्टीना में पैम्पास की आर्थिक सफलता का क्या कारण है? उन्नीसवी शताब्दी के मध्य तक पश्चिमी यूरोप के लिए पैम्पास खाद्य भण्डार के रूप में प्रगट होने लगा था। अर्जेन्टीना की केन्द्रीयकृत राजनीतिक प्रणाली ने सहज वातावरण प्रदान किया जिससे यह संभावना और भी दृढ़ हुई। 1850 और 1880 के दशकों के बीच पैम्पास में सम्पूर्ण परिवर्तन हुआ और अर्जेन्टीना की अर्थव्यवस्था पर इसका निर्णायक असर हुआ।

इस रूपान्तरण के लिए कारक तथ्यों में शामिल हैं 1852 में तानाशाह रोशेस को पदच्युत करने के बाद राजनीतिक स्थिरता, पश्चिमी यूरोप के व्यापक होते बाजार तक पहुँच होना, दक्षिण पश्चिम में भ्रमणशील भारतीय शिकारियों का दमन, कृषि और चारागाह क्षेत्र में पवन चक्की और मशीनों जैसी तकनीकों की स्थापना और कंटीले तारों की बाड़ लगाना, ब्रिटिश निवेशकों से पूंजी का आगमन, इटालियन श्रमिकों का अप्रवास, क्षेत्र में रेलवे नेटवर्क का विस्तार और उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच समय अंतराल को पूरा करने के लिए प्रशीतित सुविधाओं युक्त समुद्र पार तीव्र परिवहन।

2.2.2 पैम्पास की महत्वपूर्ण विशेषताएँ

व्युनोस ऐरीज के तानाशाह शासक रोशेस (1829-53) ने अपने राजनीतिक समर्थकों को बड़े कृषि भू-खंड उपहार में दिए और बाद में आने वाली सरकारों ने भी रेलवे निर्माण परियोजनाओं में धन लगाने के लिए पैम्पास की बड़ी कृषि भूमि को अधिकांशतः वर्तमान बड़े भू-मालिकों को कम मूल्य पर बेच दिया था।

पैम्पास में व्यवस्थित होने की दो परम्पराओं का पालन किया गया। पहले स्थान पर 1840 में सीमित कृषि उपनिवेश बनना आरंभ हुआ जहाँ पर ग्रामीण कृषि का विकास हुआ। दूसरा डेजर्ट युद्ध 1879-93 की विजय के बाद पैम्पास का क्षेत्र दोगुना हो गया। भारतीयों के साथ सीमा-संधि करने के बाद सम्पूर्ण पैम्पास व्यवसाय और सुधार के लिए उपलब्ध हो गया और उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक आप्रवासी व्यवस्था की लहर पूरी तरह समाहित हो गई।

इटली और स्पेन से आप्रवासी किसान पट्टे पर खाद्यान्न खेती करने आए। फिर भी उत्तरी यूरोपीय उपनिवेशों ने बड़े पशु फार्म की परम्परा को तोड़ा और कृषि, डेरी एवं अन्य उत्पादों के साथ छोटे छोटे मिश्रित फार्मों का नेटवर्क स्थापित किया। सेंटाफी (अर्जेन्टीना फाल्क प्रान्त) जहाँ छोटे-छोटे स्वामित्व फार्म की परम्परा थी को छोड़कर शेष संपूर्ण देश में आमतौर पर बड़े भूमिपतियों और कई पट्टेधारी छोटे-छोटे किसानों की परम्परा प्रचलित थी।

विदेशी तकनीक ने भाप नौकायन एवं प्रशीतन को इस स्तर तक सुधार दिया कि प्रशीतित माँस पैम्पास से यूरोप को समुद्र मार्ग से भेजा जाने लगा और बड़े वस्त्र उद्योग ने अत्यधिक मात्रा में ऊन की माँग पैदा कर दी।

माँस और ऊन में सुधार करने के लिए 1850 के दशक और उसके बाद भी इंग्लैण्ड से लिनकोन भेड़ नस्ल की आपूर्ति की गई तथा पैम्पास के पशु समूह में अच्छी नस्ल के पशुओं को शामिल किया गया।

नई नस्लों की रक्षा के लिए, भण्डारण और फसलों की रक्षा के लिए, पशुओं में माँस बनाने के लिए नई चारा फसलों को शामिल करने के लिए बेहतर प्रजनन नियंत्रण और चरागाह क्रमावर्तन को अपनाया गया।

2.2.3 आर्थिक और सामाजिक प्रभाव

क) *आर्थिक प्रभाव*

1840 के दशक में लगभग पूरी तरह ग्रामीण भू-दृश्य से उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में पैम्पास विश्व में खाद्यान्न उत्पादन अग्रणी देशों में प्रतिष्ठित होने लगा। उपनिवेशवाद के आरंभ से ही गेहूँ प्रमुख फसल रही है तथा कृषि की 25 से 50 प्रतिशत तक भूमि में इसकी खेती होती है आरंभ में इसकी फसल अमेरिका, चिली तथा ऑस्ट्रेलिया से होने वाले आयात के बदले पैदा की गई थी। लेकिन 1875 तक अर्जेन्टीना गेहूँ का निर्यातक देश बन गया और 1893 में 10 लाख टन गेहूँ का निर्यात किया गया। 1904 तक प्रति वर्ष कभी भी 20 लाख टन से कम निर्यात नहीं हुआ। इसी बीच 1880 के दशक में घरेलू खपत भी प्रति व्यक्ति दो गुनी हो गई। अधिकतर आटा मिल चक्की पैम्पास में थी और अर्जेन्टीना के आटे का ब्राज़ील मुख्य बाजार था। इस प्रकार गेहूँ, मकई और अलसी अर्जेन्टीना के कृषि उत्पाद की प्रमुख फसले थी और 1914 तक लगभग 60 प्रतिशत कृषि भूमि में केवल इन्हीं फसलों की खेती होती थी।

पैम्पास के महत्व का कार्यः कृषि उत्पादों के लिए बाहरी माँग होना, उत्पादन की कम लागत,

कि उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से 1929 में अत्याधिक अवनति होने तक उसकी गिनती प्रति व्यक्ति आय वाले दस शीर्ष देशों में होने लगी। वास्तव में 1852-1930 के काल में अर्जेन्टीना और अर्गवे दोनों देशों की गिनती विश्व की अर्थव्यवस्था के साथ होने लगी।

ब्रिटिश पूँजी ने भूमि विकास, रेलवे, बंदरगाह निर्माण तथा शहरी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उपलब्ध आँकड़ों से पता चलता है कि 1957 में ब्रिटिश निवेश 30 लाख पौंड से ज्यादा था जो 1890 में बढ़कर 17 करोड़ 50 लाख पौंड और 1920 में 29 करोड़ पौंड से अधिक हो गया। विदेशी निवेश मुख्यतः मूलभूत विकास (75 प्रतिशत) था उसके बाद व्यवसाय वित्त, बैंकिंग, व्यावसायिक सेवाओं और संसाधन, उद्योगों (20 प्रतिशत) और कृषि में (5 प्रतिशत) था। अपुष्ट गणना के अनुसार कुल विदेशी निवेश का लगभग 8-9 प्रतिशत निवेश केवल कृषि और उससे सम्बंधित गतिविधियों में था।

1880 के दशक तक रेलवे ने पैम्पास की जमीन को मुख्य बंदरगाहों से जोड़ने और इसकी निर्यात अर्थव्यवस्था के निर्माण का कार्य किया। जबकि अन्य क्षेत्र इसके पूरक स्तर तक रहे। 1890 के दशक में अर्जेन्टीना का रेल नेटवर्क मुख्य रूप से पैम्पास, मेसोपोटामिया, उत्तर-पूर्व और पैटागोनिका में तेजी से फैला। रेलवे विस्तार के फलस्वरूप नगर मदिरा, चीनी और तम्बाकू के व्यावसायिक केन्द्रों में परिवर्तित होने लगे। अधिकांश रेल व्यवस्था विदेशी हाथों में थी उदाहरण के लिए 1900 में, ब्रिटेनवासी रेलवे की 15 प्रतिशत कम्पनियों का संचालन और प्रशासनिक नियंत्रित करते थे। जिसमें राष्ट्रीय मार्ग का 77 प्रतिशत भाग शामिल है और शेष कम्पनियों पर उनका पट्टेदारी या वित्तीय पर्यवेक्षण के माध्यम से अप्रत्यक्ष नियंत्रण था।

अर्जेन्टीना का आर्थिक विकास (1853-1930) न केवल विश्व बाजार के लिए माँस और खाद्यान्न तक सीमित रहा अपितु प्रथम विश्व युद्ध के बाद कुछ अन्य वस्तुओं के उत्पादन में भी वृद्धि हुई जैसे चीनी, कपास और शराब। इसके अतिरिक्त औद्योगिक प्रगति ने घरेलू माँग पूरी करने के लिए स्थानीय कृषि उत्पादों को संसाधित करने में भी वृद्धि की। इन इकाइयों के लिए सीमा शुल्क में व्यापक सुरक्षा प्रदान की गई थी। माना जाता है कि 1913 तक अर्जेन्टीना में खपत हुई वस्तुओं में से लगभग 71 प्रतिशत वस्तुएँ स्वदेशी थीं। इनमें से 91 प्रतिशत खाद्यान्न, 85 प्रतिशत वस्त्र तथा 86 प्रतिशत मुद्रित सामग्री स्थानीय रूप से उत्पादित थे। लेकिन खपत हुए 38 प्रतिशत रासायनिक पदार्थ, 33 प्रतिशत धातु सम्बंधी सामान और 23 प्रतिशत वस्त्र राष्ट्रीय उत्पादन थे। इससे पता लगता है कि अर्जेन्टीना पहले औद्योगिक विकास के पर्याप्त स्तर पर पहुँच चुका था। निर्यात मूलक वस्तुओं के उत्पादन पर आधारित पैम्पास का विकास धन्यवाद का पात्र है।

ख) ***सामाजिक प्रभाव***

अर्जेन्टीना की अर्थव्यवस्था के विकास के लिए पारम्परिक आप्रवास आवश्यक था। प्रथम चरण (1870-1930) में यूरोपवासियों के आने से अन्तर्राष्ट्रीय बाजार से सम्बंधित कृषि क्षेत्र का व्यापक विस्तार हुआ। 1853 के अर्जेन्टीना के संविधान ने श्रमिक बल बढ़ाने के लिए यूरोपीय आप्रवास को प्रेरित किया क्योंकि उस समय लेटिन अमेरिकियों की औसत आयु काफी कम थी। उपलब्ध विकास से पता लगता है कि 1870 और 1914 के बीच 34 लाख से अधिक आप्रवासी अर्जेन्टीना में आए जो 1915 में देश के 80 लाख मूल निवासियों के अनुपात में अत्यधिक महत्वपूर्ण संख्या है। इसके बाद युद्ध के दौरान दूसरी बार में 13 लाख आप्रवासी आए। अकेले पैम्पास में ही 50 प्रतिशत से अधिक यूरोपीय अप्रवासी आते हैं और इस प्रकार संपूर्ण देश में इन पाँच प्रान्तों में ही सर्वाधिक जनसंख्या है।

नई निर्यात अर्थव्यवस्था काल में अर्जेन्टीना में जनसंख्या सम्बंधी पर्याप्त परिवर्तन हुए। 1855-1914

के दौरान पैम्पास की आबादी में असाधारण वृद्धि हुई जो 1850 में 3.16 लाख से बढ़कर 1930 तक 45.4 लाख हो गई। जबकि ब्यौंस एरिज में 1850 में 8 प्रतिशत से बढ़कर 1930 में 26 प्रतिशत हो गयी। इसी अवधि में सेंटाफी में 4 प्रतिशत से 11 प्रतिशत तक आबादी पहुँच गयी। फिर भी उत्तर पूर्व क्यूओं, कोरडोबा और मैसोपोटामिया में इसी काल में आबादी अत्यधिक रूप से कम हो गयी।

1869-1914 के दौरान कुल जनसंख्या की शहरी आबादी 28.6 प्रतिशत से बढ़कर 52.7 प्रतिशत हो गयी। रोजेरियो की भरपूर वृद्धि के साथ (लगभग 10 गुना) ग्रेटर ब्योंस एरिज के विस्तार के कारण ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी केन्द्रों पर आबादी में वृद्धि हुयी। 1881-90 और 1901-10 के दशकों में आप्रवासी प्रवाह अर्जेन्टीना की विद्यमान आबादी का 2 से 3 प्रतिशत के बीच रहा। पैम्पास में यूरोपीय आप्रवासियों का 50 प्रतिशत से अधिक का आगमन हुअ। ये आप्रवासी शहरों में रहना स्वाभाविक रूप से पसंद करते थे। इन विदेशी आप्रवासियों की अपेक्षाकृत अधिक संख्या ग्रामीण क्षेत्रों में पट्टेधारी के रूप में कार्य करती थी जबकि शहरी क्षेत्रों में कुल औद्योगिक और व्यावसायिक संगठनों का दो-तिहाई हिस्सा विदेशी स्वामित्व में था और उनके आधे कर्मचारी आप्रवासी थे। ऐसा माना जाता है कि आप्रवासियों की शहरी सघनता 1890 के बाद भू-स्वामित्व के अवसरों में कमी आने के कारण थी।

सहयोगी या आश्रित बहिरमुखी विकास के समग्र ढाँचे में निःसन्देह कुछ मामले स्वायत्त विकास के भी थे जिसके लिए सामाजिक संरचनाएँ अधिक व्यवस्थित, लोकतांत्रिक थी तथा सत्ता के केन्द्र भी इन विकासों के लिए कोई चुनौती प्रस्तुत नहीं करते थे। जैसा कि पहले वर्णन किया गया है सेंटा फी का उदाहरण अर्जेन्टीना में विकास का वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत करता है। विश्लेषक बताते हैं कि अपेक्षाकृत घनी आबादी, कृषि वस्तुओं का विपणन तथा कुछ संसाधक इकाइयों के कारण एक विशेष प्रकार का विकास था जो सामान्यतः आर्द्र पैम्पास के विकास से भिन्न था। ऐसे अपवाद स्वरूप मामले मेडलीन (कोलम्बिया) साओ पोलो (ब्राज़ील) और मोंटेरी (मैक्सिको) में पाए गए।

कमोबेश इसी प्रकार अर्जेन्टीना में भू-स्वामी-पट्टेदार सम्बंध ब्रिटिश साम्राज्य के दौरान भारत में परिचित जमींदारी प्रथा के समान थे। अर्जेन्टीना में पट्टेदारी की संविदा फसलों के प्रकार, वस्तुओं के रूप में किराया, उत्पाद को भू-मालिक या एजेंट के माध्यम से बेचने के आधार पर निर्भर करता है। ये अनुबंधित शर्तें दो सांझीदारों की अपेक्षा पट्टेदारों पर अधिक लागू होती है। फिर पट्टेदारी अल्पावधि अर्थात् अल्पकालिक पट्टेदारी कृषि के लिए होती थी। एक बार भूमि व्यवस्थित और सही हो जाने पर पट्टेदार से खाली करा ली जाती थी तथा उसे जाना होता था जो फिर किसी अन्य भूमि का विकास करता या शहर में चला जाता था। इस प्रकार स्वामित्व का स्वरूप उपनिवेशी काल से भिन्न नहीं था और इस प्रकार समुद्र पार बाजारों की परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलन और परिवर्तन करने के लिए प्रोत्साहन का अभाव था। आर्द्र पैम्पास का व्यवसाय एक अभ्यास था जिसमें कोई सांस्कृतिक परिवर्तन शामिल नहीं था और न ही कोई बड़ा तकनीकी परिवर्तन – मूल स्थानीय स्वरूप में तो कोई भी परिवर्तन नहीं था।

क्या नई निर्यात अर्थव्यवस्था (1853-1930) के प्रसार से स्वदेशी भारतीयों में कोई संघर्ष पैदा हुआ था? प्राप्त सूचनाएँ संकेत करती हैं कि दक्षिणी पैम्पास ओर पैटागोनियाँ जहाँ 2 लाख मूल निवासियों की आबादी बड़े भू-क्षेत्र में फैली हुई थी उसे तथाकथित 1879-83 की 'डेर्जट वार' में विजय के बाद दक्षिण पूर्व जंगलों में धकेल दिया गया था। किसी सांस्कृतिक सम्बंध या मेल-जोल से पूर्व उन्हें नष्ट कर दिया गया था।

2.2.4 पैम्पास ने अपनी शान क्यों खोई?

अर्जेन्टीना की निर्यात अर्थव्यवस्था में समृद्धि 1853-1930 के दौरान पैम्पास के विकास एवं उसके

दोहन के कारण हुई। उत्पादन के नए क्षेत्र और वस्तुओं के होने के बावजूद विकास का ढाँचा औपनिवेशिक काल से अधिक भिन्न नहीं था। औपनिवेशिक काल में जहाँ उत्पाद दो प्रकार का - स्थानीय भोजन के लिए और समुद्र पार बाजारों के लिए था वह 1853-1930 की अवधि में भी इसी प्रकार चलता रहा। यद्यपि दास प्रथा पर प्रतिबंध था तो भी विभिन्न प्रकार की कृषि दास प्रथा बड़ी भू-संपदा के माध्यम से जीवित भारतीय समुदायों की कीमत पर फैल रही थी। नए व्यावसायिक सांझेदार ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका सीधे ही कार्य करते थे लेकिन उनमें महाद्वीप के संसाधनों को दोहन करने में स्पेन और पुर्तगालवासियों से कोई भिन्नता नहीं थी।

1930 के दशक से कृषि उत्पादन बढ़ती घरेलू खपत और बड़ी विदेशी मुद्रा अर्जित करने की माँग पूरी करने में असफल रहने लगा। उत्पादकता बढ़ाने तथा शहरी आबादी के लिए वांछित उत्पादन की मात्रा बढ़ाने में पैम्पास की असफलता के फलस्वरूप कृषि निर्यात में कमी आई। पैंम्पास में बड़े प्राकृतिक भू-भाग के संसाधन थे और उस क्षेत्र में व्यापक खेती की परम्परा चारों ओर फैली हुई थी। फिर भी, कृषि उत्पादों की माँग में निरंतर वृद्धि होती रही जिसकी पूर्ति के लिए भू-संसाधनों की व्यवस्थित करना काफी खर्चीला था और इस प्रकार से भूव्यवस्था की चाल सुस्त रही जिससे कृषि उत्पादन और साथ ही निर्यात में ठहराव आ गया।

कुछ वर्षों बाद पैम्पास की भूमि में भू-संसाधनों के अत्यधिक दोहन से भू-क्षरण की समस्या पैदा हो गई। भूमि की उत्पादकता बढ़ाने के किसी प्रयास पर विचार नहीं किया गया। पैम्पास का भू-वितरण काफी उल्टा है जैसे 8 प्रतिशत भू-स्वामियों के पास 80 प्रतिशत कृषि भूमि है संख्या में कम स्वामित्व आर्थिक दृष्टिकोण से अव्यवहारिक था। छोटे भू-स्वामी पैम्पास की 27 प्रतिशत भूमि में खेती करते थे और 17 प्रतिशत श्रमिक बल को सहायता प्रदान करते थे। जमींन और श्रम दोनों की कम उत्पादकता ने समग्र उत्पादन में उनके हिस्से को कम कर दिया था।

2.2.5 उच्च दबाव और उसका प्रभाव

1930 के दशक में अत्यधिक दबाव बढ़ने से पैम्पास उत्पादों के लिए समुद्र पार बाजार घटने लगा, औद्योगिक देशों ने अपनी कृषि सुरक्षा के लिए सीमा शुल्क में वृद्धि जैसी बाधाएँ खड़ी कर दी और प्रशीतण और शीतकारी तकनीकों से युक्त अर्जेन्टीना के निर्यात में वृद्धि तथा खाद्यान्नों का मशीनी उत्पादन अचानक समाप्त हो गया। कार्य और आमदनी के कम अवसर होने से आप्रवासियों का प्रवाह भी समाप्त हो गया।

इस सबसे आतंरिक विकास की नीतियाँ बनाई जाने लगी; पेरोन के अधीन राष्ट्रीयकरण विकास का सिद्धान्त बन गया और शहरी आबादी से व्यापक समर्थन मिलने लगा। स्थानीय निर्माण को स्वदेशी औद्योगिक कच्चे माल पर आधारित निर्माण के विस्तार को प्रोत्साहित किया गया।

2.3 'उत्कर्ष और अपकर्ष' चक्रः ब्राज़ील

स्पेनी औपनिवेशिकों से भिन्न ब्राज़ील 1822 में स्वतंत्र होने तक पुर्तगाल का उपनिवेश बना रहा। फिर भी लेटिन अमेरिका के अन्य उपनिवेशों की तरह ही इसका भी आरंभिक विकास वैसे ही हुआ जो एक निश्चित समय में एक मुख्य वस्तु के मुख्य उत्पादन और निर्यात पर आधारित था। इस प्रकार बीसवीं शताब्दी तक ब्राजील की ऐतिहासिक अर्थव्यवस्था का एक क्रमिक चक्र इसकी विशेषता रही जिसमें इस देश ने ब्राज़ील काष्ठ, चीनी, स्वर्ण, हीरे, रबड़, कोक और कॉफी के विश्व उत्पादन में अग्रणी स्थित प्राप्त कर ली। फिर भी प्रत्येक मद का उत्कर्ष काल पर्याप्त रूप से परिवर्तित होता रहा तथा (कॉफी को छोड़कर) अंततः उसकी सर्वोच्चता समाप्त हो गई।

2.3.1 आर्थिक चक्र की मुख्य विशेषताएँ

ब्राज़ील की अर्थव्यवस्था पर प्रभुत्व रखने वाले 'सर्वोच्च उत्पाद' का आनुमानिक काल इस प्रकार है: ब्राज़ील काष्ठ चक्र - 1500 से 1530; गन्ना चक्र - 1550 से 1700; स्वर्ण चक्र - 1700 से 1775; रबड़ और कॉफी चक्र - 1850 से 1930।

प्रत्येक आर्थिक चक्र के उद्भव, उत्कर्ष और समाप्ति का क्षेत्र था तथा समग्र अर्थव्यवस्था के संदर्भ में उनका अलग-अलग प्रभाव था। जैसे ब्राज़ील काष्ठ तटीय क्षेत्र के साथ अपेक्षाकृत एक तंग भू-पट्टी से आती थी। सुगमता वाले क्षेत्रों में इसका उत्पादन कम होने से ब्राज़ील काष्ठ व्यापार में रुचि समाप्त हो गई। बाद में ब्राज़ील के उत्तर पूर्व में गन्ना बोया गया और उसमें बहुत वृद्धि हुई। इसके बाद डचों द्वारा कैरिबियन क्षेत्र में चीनी उद्योग स्थापित करने के लिए इसे सस्ता और बचत वाला माना जाने लगा। स्वर्ण चक्र के बारे में जानने के बाद, मिनास गेयरिस में सेरा-डू-इस्पिंहाको आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया और सेंरटाओं के आसपास के क्षेत्रों में तथा साओ पोलो के दक्षिण में इससे पशु चरागाहों का विकास हुआ। यह खाद्य गोमाँस और भार बने पशुओं के माँस की बढती माँग के कारण आवश्यक हो गया था। कॉफी उत्पादन अधिकांशतः राओ-डी जेनियरो, साओ पोलो और बाद में पराना के राज्यों में केन्द्रीयकृत हो गया। कॉफी क्षेत्र की वृद्धि के परिणामस्वरूप विदेशी आप्रवास में अत्यधिक योगदान मिला इससे रेलवे का विकास हुआ तथा शहरीकरण में गति आई और स्वदेशी बाजार का विकास हुआ जिससे स्वदेशी उद्योगों की वृद्धि हुई।

प्रत्येक आर्थिक चक्र अकेले ही विकसित हुआ तथा दूसरे चक्र से न केवल पृथक रहा अपितु जैसा कि पहले वर्णन किया गया है यह अलग-अलग काल में घटित हुआ। इसके अतिरिक्त स्वर्ण और रबड़ जैसे चक्र सीमित अवधि तक ही रहे और बाद में एक रिक्तता आ गई जिससे ब्राज़ील की अर्थव्यवस्था में ठहराव आ गया और आर्थिक मंदी का दौर आरंभ हो गया।

प्रत्येक चक्र का समृद्धि काल मुख्य रूप से उस उत्पाद के निर्यात पर निर्भर करता था। जब कभी निर्यात में गिरावट आई उत्कर्ष लगभग समाप्त हो गया। 17वीं शताब्दी की तीसरी तिमाही में चीनी की अन्तर्राष्ट्रीय दर अपने पूर्व स्तर से आधी हो गई इससे वास्तविक आमदनी कम हो गई। 18वीं शताब्दी के अंत में स्वर्ण उत्पादन में कमी आने से नए निर्यात की खोज में तेजी आई। कपास की स्थिति जैसी 19वीं शताब्दी के आरंभ में थी वैसी ही प्रसिद्धि पूर्व स्थिति बन गई। संयुक्त राज्यों के साथ ब्राज़ील कुछ समय तक इंग्लैण्ड को कपास निर्यात करने वाला प्रमुख देश रहा लेकिन शीघ्र ही उसने संयुक्त राज्य अमेरिका के आगे हथियार डाल दिए। इसी समय गन्ने में कुछ सुधार नजर आने लगा लेकिन अभी भी गन्ने में ब्राज़ील को क्यूबा से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती थी। इस अवधि में कॉफी की फसल में वृद्धि हुई और अगली शताब्दी के लिए इसने ब्राज़ील के आर्थिक इतिहास में शीर्ष अवस्था बना ली। फिर भी बीसवीं शताब्दी के आरंभ में कुछ अवधि तक तयाजोन क्षेत्र से रबड़ के निर्यात में भारी वृद्धि हुई परन्तु बाद में इंग्लैण्ड ने इस उद्योग को विश्व के अन्य भागों में विशेषतः दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में और विशेषतः मलेशिया में स्थानान्तरित कर दिया।

ब्राज़ील में आर्थिक चक्रों की अवधि के बारे में संक्षिप्त रूप से हम कह सकते हैं कि ब्राज़ील के उत्पाद चक्रों में हमेशा परिवर्तन होने वाले लम्बे काल में कोई भी व्यक्ति मौटे तौर पर विकास अभियान का एक आधार नहीं बता सकता। चक्रों ने देश के विभिन्न भागों में एक तरह से आर्थिक द्वीप बना दिए जो परस्पर एक दूसरे से पृथक थे और अलग-अलग काल में समृद्ध हुए। इसके परिणामस्वरूप छितरे हुए उपनिवेश बन गए, कच्चे माल के निर्यात के आधार पर विस्तार हुआ और राष्ट्रीय आर्थिक समाकलन में कमी आई।

2.3.2 आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं पर प्रभाव

क) *आर्थिक प्रभाव*

ब्राज़ील बाहरी विस्तार के फलस्वरूप होने वाली विदेशी अर्थव्यवस्था के विकास का साक्षी रहा है। ब्राज़ील में होने वाले प्रत्येक आर्थिक चक्र की विशेष शैली रही है और शेष अर्थव्यवस्था पर उसका सीमित प्रभाव रहा है। यद्यपि विकास प्रक्रिया ब्राज़ील काष्ठ से आरम्भ हुई तो भी अगले 150 वर्षों तक वास्तव में चीनी चक्र ने ब्राज़ील के आर्थिक और सामाजिक वातावरण में परिवर्तन आरंभ किया। चीनी उत्कर्ष के मुख्य कारण थेः (i) चीनी की समुद्र पार अत्यधिक माँग; (ii) खेती के लिए पश्चिमी अफ्रीका से दास श्रमिकों का आयात; (iii) यूरोपीय बाजारों में ब्राज़ील से चीनी परिवहन के लिए डचवासियों द्वारा आधारभूत संरचनाओं का विकास; (iv) भार बने पशुओं के माँस की माँग तथा चारागाहों का विकास। इन अनुकूल तथ्यों के बावजूद ब्राज़ील के उत्तर पूर्व में चीनी उत्कर्ष उस समय समाप्त होने लगा जब डचवासियों ने किफायती श्रम और यूरोपीय बाजारों के लिए कम परिवहन लागत के साथ कैरिबियन क्षेत्र में प्रतिस्पर्धात्मक गन्ना बागान विकसित कर लिए। फिर 17वीं शताब्दी के तीसरे भाग में चीनी के मूल्य में तीव्र गिरावट आई तथा ब्राज़ीलवासियों की वास्तविक आमदनी कम हो गई।

इसी प्रकार की स्थिति स्वर्ण और हीरे के खनिज केन्द्रों की हुई। स्वर्ण उत्कर्ष काल में मिनास गेरीनस के सेरा-डू-इंपिस्फिकों आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र बन गए। चीनी और खनिजों के कारण पशुओं के माँस की माँग उत्पन्न हुई तथा जनसंख्या की भोजन के रूप में गो माँस की आवश्यकता पूरी करने के लिए चीनी और स्वर्ण अर्थव्यवस्था के साथ-साथ दोनों सेरटाओ और साओ-पोलो के दक्षिण क्षेत्रों में पशु चारागाहों का विकास हुआ। चरागाहें चीनी उद्योग के लिए विकसित हुई थी लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से इससे बहुमूल्य उप पदार्थों का उत्पादन हुआ।

इस प्रकार चीनी चक्र और 18वी शताब्दी के अल्पकालिक स्वर्ण उत्कर्ष की समाप्ति के बाद ब्राज़ील की अर्थव्यवस्था का सीमित विकास हुआ। इसी प्रकार दक्षिणी संयुक्त राज्य अमेरिका के पास उत्पादकों की प्रतिस्पर्धा के कारण उत्तरपूर्व की कपास अर्थव्यवस्था भी कमजोर हो गई। तम्बाकू, चर्म, चावल और कोक अल्प उत्पाद थे उनके बाजार विस्तार की संभावनाएँ अधिक नहीं थी। इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तथा बीसवीं शताब्दी के आरंभ में कॉफी चक्र 1930 तक अर्थव्यवस्था पर छाया रहा। विपरीत अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक परिस्थितियों में साओ पोलो में औद्योगीकरण की नींव डालने में कॉफी को छोड़कर अन्य किसी उत्पाद का ब्राज़ील की अर्थव्यवस्था पर इतना व्यापक प्रभाव नहीं पड़ा। यहाँ तक कि कॉफी अर्थव्यवस्था का भी ब्राज़ील की संपूर्ण अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव नहीं पड़ सका और इसका प्रभाव साओ पोलो व रीमो-डी जैनिरियो क्षेत्र में ही सीमित प्रभाव रहा।

उत्पाद निर्यातकों के समक्ष निरंतर व्यवसाय की विपरीत परिस्थितियाँ रही। वस्तुओं के मूल्यों में उतार-चढ़ाव से ब्राज़ील की अर्थव्यवस्था पर और विकास प्रक्रिया में उसकी जनसंख्या पर हानिकर प्रभाव पड़ा। 1929-34 में भारी दबाव के दौरान चीनी के मूल्यों में कमी से आरंभ होकर कॉफी के मूल्यों में भारी गिरावट आई और अपकर्ष/मंदे के काल में निवेश योग्य संसाधन न होने के कारण अर्थव्यवस्था पर संकट आ गया। प्रत्येक चक्र की उत्कर्ष अवधि में खपत तो अत्यधिक रही लेकिन मंदे की अवधि में ब्राज़ील को मजबूत बनाए रखने के लिए विभिन्न गतिविधियों में बहुत कम निवेश किया गया।

विश्व पूँजी बाजार में बाँड़ों को जारी करने से अधिकतर विदेशी पूँजी ही ब्राज़ील की स्वाधीनता के आरंभ से ही उसके विकास के लिए धन का महत्वपूर्ण स्रोत बन गई थी। 1824 के आरंभ में जब पहली बार स्टर्लिंग बॉन्ड बेचे गए तो ब्राज़ील औसतन 10 प्रतिशत छूट पर उन्हें खरीद लिया था।

कमीशन तथा दलाली की गणना करने के बाद उन बॉड़ों से उस समय सममूल्य पर 80 से 90 प्रतिशत के बीच आमदनी हुई। ऋणों का अधिकांश भाग उत्पादक गतिविधियों जैसे शहरी विकास के लिए रेलमार्गों का निर्माण; बन्दरगाहों की सुविधा प्रदान करना; सफाई और जल संसाधन और अन्य सुविधाएँ प्रदान करने में निवेश किया गया। इन परियोजनाओं की मामूली उत्पादकता से ऋण की वास्तविक लागत से अधिक आमदनी नहीं हुई और ब्राज़ील का बाहरी ऋण तेजी से बढ़ने लगा जो 1880 में 20 करोड़ डालर से कम था जो 1930 में बढ़कर लगभग 1.3 बिलियन हो गया। ऋण का भुगतान करने के लिए निर्यात को विशेषतः कॉफी क्षेत्र में निर्यात बढ़ाया गया।

यद्यपि 'उत्कर्ष तथा अपकर्ष' के चक्र अवधि और प्रभाव के क्षेत्र में परिवर्तित होते रहे लेकिन इनसे क्षेत्रीय असंतुलन की एक गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई। इससे अप्रवास को अत्यधिक बढ़ावा मिला जैसे कॉफी उत्कर्ष वाले क्षेत्र के आसपास उत्तर-पूर्व से साओ पोलो राज्य में श्रमिक और पूंजी का प्रवाह बढ़ गया। आय और सम्पत्ति में मापी गई असमानता के तरीकों से ज्ञात हुआ कि निर्धन उत्तर-पूर्व और धनी साओ पोलो के बीच अन्तर बढ़ता जा रहा है। साओ-पौलो में औसत आमदनी उत्तर-पूर्व से कई गुणा अधिक है। साओ पोलो में पूरी तरह विकसित एवं सम्पन्न औद्योगिक क्षेत्र है जिसकी तुलना विश्व के अति विकसित क्षेत्र से की जा सकती है। इस प्रकार ब्राज़ील की जनसंख्या में आय के मामले में अत्यधिक असमानता है जो कई वर्षों में और अधिक हो गई है।

ख) ***सामाजिक प्रभाव***

चीनी चक्र में गन्ने की फसल उगाने के लिए पश्चिमी अफ्रीका से दास श्रमिक बुलाए गए। अठाहरवीं शताब्दी में स्वर्ण चक्र काल में पुर्तगाल से अप्रवासी आकर्षित हुए और रायो (राज्य) में उनकी काफी संख्या बढ़ गई तथा देश के आंतरिक भाग में पुर्तगाली प्रभाव एवं बस्तियाँ बढ़ने लगी। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में तथा बीसवीं शताब्दी के आरंभ में यूरोपवासी विशेषतः जर्मनी और इटलीवासी पर्याप्त संख्या में ब्राज़ील के दक्षिणी पूर्व भाग में आए ताकि उन्हें कृषि कार्यों में लगाया जा सके। साओ पोलो के कॉफी बागान अर्थव्यवस्था में उनकी भागीदारी बहुमूल्य थी। फिर कॉफी बागानों में श्रमिकों की बड़ी आवश्यकता पूरी करने के लिए आंतरिक स्थानान्तरण किया गया और उत्तर-पूर्व से पूंजी भी साओ पोलो क्षेत्र में स्थानान्तरित की गई।

इस प्रकार ब्राज़ील अपनी अर्थव्यवस्था की विकास प्रक्रिया में कई जातियों का मिश्रण क्षेत्र बन गया था। फिर भी जनसंख्या की अपार वृद्धि दर (मुख्यतः प्रवास के कारण) का प्रत्येक आर्थिक चक्र पर व्यापक प्रभाव पड़ा। उदाहरण के लिए चीनी संसाधन में वृद्धि के बावजूद आबादी में वृद्धि होने से प्रति व्यक्ति आय में कमी आई। फिर आबादी की वृद्धि के कारण खदान केन्द्रों पर भोजन महँगा हो गया।

ब्राज़ील में इस प्रकार के विकास से पर्यावरण में कमी आने लगी। स्वर्ण चक्र काल में मिनास गेरिस के खनिज केन्द्रों पर आबादी की वृद्धि से लकड़ी और कोयले की अत्यधिक आवश्यकता पड़ने लगी। इससे मध्यवर्ती मिनास गेरिस की पहाड़ियाँ बंजर बन गई। इस प्रकार ब्राज़ील में जहाँ एकमात्र उत्पादक भूमि पर्याप्त थी उसकी उर्वरकता बनाए रखने का ध्यान दिए बिना उसका अत्यधिक दुरुपयोग किया गया। नार्थ-ईस्ट इसका उदाहरण है। ब्राज़ील का सुखा पीड़ित नार्थ ईस्ट में न केवल अत्यधिक लकड़ी और वन संसाधन नष्ट हुए अपितु कम और रुक-रुक कर होने वाली वर्षा के कारण इस क्षेत्र में अभूतपूर्व पर्यावरणीय संकट पैदा हो गया।

2.4 खनिज पदार्थों का महत्वः चिली

2.4.1 ताम्र और स्वर्ण खनन काल

ऐतिहासिक रूप से कहा जाए तो चिली में खनिजों के दोहन से अतीत के औपनिवेशिक काल की याद आ जाती है। उदाहरण के लिए 17वीं शताब्दी में चिली के कोक्विम्बों प्रान्त में ताम्र खनन तथा 18वीं शताब्दी में नार्टे चीको के प्रान्त में स्वर्ण खनन चिलीवासियों के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन पर छाया रहा। बदले में खनन कार्यों ने अनेक प्रकार की आर्थिक गतिविधियों की शुरुआत की। भोजन के साथ कृषि और पशुधन की आपूर्ति खनन क्षेत्रों में बढ़ गई। खच्चरों को चराने के लिए चारे और भोजन की माँग बढ़ने लगी तथा खनिज गलाने/पिघलाने के लिए ईंधन के साथ लकड़ी का परिवहन होने लगा।

1818 में चिली की स्वतंत्रता के समय जब स्वर्ण उत्पादन चरम शिखर पर पहुँच गया तो उसके बाद चिली में चांदी और ताम्बा महत्वपूर्ण खनिज स्रोत के रूप में प्रकट हुए। उदाहरण के लिए 1811 और 1870 के बीच (यद्यपि बीच बीच में अंतरात था और देश के विभिन्न हिस्सों में) चांदी का खनन और उत्पादन कई गुना बढ़ गया था। इसका उत्पादन न केवल चांदी उत्पादन क्षेत्र में जनसंख्या बढ़ने के कारण हुआ अपितु बढ़ती हुई आबादी के लिए भोजन जुटाने हेतु कृषि को बढ़ावा देने के लिए भी किया गया। चिली की चांदी का उत्पादन 1850 के दशक तक निरंतर बढ़ता रहा लेकिन 1860 के दशक में कुछ कम हो गया परन्तु 1880 के दशक में चरम पर पहुँच गया जिसका औसतन वार्षिक उत्पादन 1,57,000 कि.ग्रा. होता था।

कुछ इसी तरह की स्थिति उन्नीसवीं शताब्दी में चिली में ताम्र खनन और उत्पादन की थी। फिर भी राष्ट्रीय आय के स्रोत के रूप में ताम्बा अधिक महत्वपूर्ण था और चिली में ताम्र खनन का इतिहास चांदी से न केवल पुराना है अपितु निरंतर जारी भी रहा है। चिली में उन्नीसवीं शताब्दी और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ताम्र खनन के दो विशेष चरण हुए। प्रथम चरण (1820 के दशक से 1870 के दशक के बीच) में नोर्ट चीकों क्षेत्र में ताम्बे का उत्पादन बड़ी तेज़ी से बढ़ा और 1860 में मात्र उसकी निर्यात राशि चिली के समग्र निर्यात राशि की आधी थी। 1860 के दशक में ताम्बे के विश्व उत्पादन में चिली का उत्पादन पिछले दो दशकों में 30 प्रतिशत से बढ़कर 44 प्रतिशत हो गया था। फिर भी संयुक्त राज्य अमेरिका और स्पेन के साथ प्रतिस्पर्धा एवं विकसित तकनीक के कारण विश्व उत्पादन में चिली का हिस्सा 1880 के दशक में 16 प्रतिशत तक गिर गया और 1890 के दशक में 6 प्रतिशत और गिर गया। इस समय तक चिली की अर्थव्यवस्था में नाइट्रेट ताम्बे पर हावी हो गया। चिली में ताम्र खनन का दूसरा चरण ताम्र तकनीक में उस क्रान्ति से पूरी तरह सम्बद्ध था जो बीसवीं शताब्दी के पहले दो दशकों में संयुक्त राज्य अमेरिका में हुई थी। चिली में ताम्र खान के दो चरण न केवल खनिज खान में विशिष्ट थे अपितु वे चिली के परिदृश्य पर विभिन्न प्रभाव डालने में भी विशिष्ट थे। फिर भी, दोनों में एक समानता यह थी कि प्रत्येक चरण में ताम्र उत्पादन एवं निर्यात पर चिली की अर्थव्यवस्था पूरी तरह निर्भर थी।

2.4.2 नाइट्रेट उद्योगः उत्कर्ष और अपकर्ष काल

खनिज संशोधनों के विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण था चिली का नाइट्रेट। नाइट्रेट स्रोतों की उपलब्धता तथा एटकामा मरुस्थल से तट तक कम परिवहन लागत सहित कम प्रक्रिया लागत इसके शीघ्र दोहन के अनुकूल थी।

नाइट्रेट उद्योग की शीघ्र वृद्धि 1870 दशक के उत्तरार्द्ध में भारी दबाव देखने के बाद 1880 के दशक में हुई। चिली द्वारा पेरु से नाइट्रेट प्रान्तों को छिनने और उसके बाद इस उद्योग को निजी स्वामित्व में सौंपना नाइट्रेट उद्योग के इतिहास में निर्णायक क्षण थे। इस निर्णय से चिली के नाइट्रेट उद्योग में ब्रिटिश पूंजी ने बड़े स्तर पर प्रवेश किया। 1880 के दशक से नाइट्रेट उद्योग के उत्कर्ष काल में पाँच बड़े नाइट्रेट खनन क्षेत्रों का विकास हुआ। नाइट्रेट उत्कर्ष काल के सुनहरे दिनों में टरपाका प्रान्त के नाइट्रेट उद्योग का 70 प्रतिशत भाग ब्रिटिश हाथों में था।

2.4.3 आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं पर प्रभाव

क) *आर्थिक प्रभाव*

चिली में खनिज पुनउत्कर्ष में सर्वाधिक महत्वपूर्ण विकास 1880 और 1925 के बीच प्राकृतिक नाइट्रेट का था यहाँ तक कि 1880 से पूर्व भी जब चिली, बोलिविया और पेरु के बीच राजनीतिक समस्याएँ थी तब भी चिली के श्रम और पूंजी ने नाइट्रेट भंडार के दोहन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। दोहन का प्रतिस्पर्धात्मक लाभ खदानों की कम संचालन लागत तथा यूरोप में खपत केन्द्रों तक पहुँचाने के लिए तटीय परिवहन की कम लागत में निहित था। 1880 में उपरोक्त तीन देशों में राजनीतिक समस्या के समाधान के बाद, नाइट्रेट उद्योग का व्यापक विकास हुआ तथा चिली के एटाकामा मरुस्थल क्षेत्र में परिवहन का ऐसा आधारभूत ढाँचा बना जिसकी तुलना विश्व के किसी भी मरुस्थल क्षेत्र से नहीं की जा सकती। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस उद्योग के विकास के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका ने तथा ब्रिटेन की विदेशी संगठनों ने अत्यधिक अपेक्षित पूँजी एवं तकनीक भी प्रदान की।

रेलवे निर्माण कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता प्राप्त हुई जो या तो नाइट्रेट कंपनियों के द्वारा या फिर नाइट्रेट के कारण लाभदायक निवेश अवसरों को देखते हुए स्वतंत्र कंपनियों के द्वारा दी गई। यह प्रणाली नाइट्रेट के आरंभिक संसाधन केन्द्रों से बन्दरगाह तक लघुतम मार्ग एवं न्यूनतम लागत के द्वारा पहुँचने के लिए बनाई गई थी। मरुस्थल में नाइट्रेट विकास के प्रोत्साहन के अभाव में रेलवे नेटवर्क देश की केन्द्रीय घाटी में प्रवेश नहीं कर पाता और न ही फिर दक्षिण भाग में पहुँचता।

चिली के नाइट्रेट विकास और दोहन कार्यों से परिवहन व्यवस्था में सम्पर्क होने के अतिरिक्त और भी अनेक स्थानीय प्रभाव पैदा हो रहे थे। जैसे चिली सरकार नाइट्रेट कम्पनियों से राजस्व एकत्रित कर रही थी जिसे देश में अन्यत्र विकास परियोजनाओं में लगा रही थी।

नाइट्रेट पर निर्यात करके रूप में सरकार का राजस्व हिस्सा 1880 में कुल राजस्व के तुच्छ 5.5 प्रतिशत से बढ़कर 1895 में 66 प्रतिशत 1905 में कुछ घटर कर 56.6 प्रतिशत तथा 1910 से 1920 के बीच लगभग 50 प्रतिशत पर स्थिर रहा जो फिर 1925 में तेजी से कम हो कर 37 प्रतिशत रह गया था। फिर भी चिली राज्य वित्त विकास परिषद तेल क्षेत्रों की तलाश और विकास में तथा निर्माण उद्योग में निवेश करने में लगा रहा। नाइट्रेट उद्योग इस क्षेत्र में एंडियन पार पशु और कृषि वस्तुओं के व्यापार को प्रोत्साहित करने में लगा हुआ था।

फिर भी नाइट्रेट उद्योग के इतिहास का नकारात्मक पक्ष भी है जो यह दर्शाता है कि उत्कर्ष के बाद तेजी से अपकर्ष भी आया। चूँकि नाइट्रेट एक निर्यात मूलक उद्योग था इसके बड़े बाजार पश्चिमी यूरोप एवं संयुक्त राज्य अमेरिका थे। अतः इन बाजारों में माँग ही नाइट्रेट का निर्णायक तथ्य थी। फिर भी नाइट्रेट की विश्व खपत नाइट्रेट के साथ टिक नहीं सकी अपितु चिली की उत्पादन क्षमता से अपेक्षाकृत कम हो गई। अधिक आपूर्ति से मूल्यों में गिरावट आ गई और ऐसे हालात में उत्पादकों ने उत्पादन कम करने के लिए एक समझौता किया। इससे सरकार को निर्यात करने से राजस्व कम

प्राप्त हुआ, श्रमिकों की सेवाएँ समाप्त हो गई नौ परिवहन मालिकों को हानि हुई और नाइट्रेट उद्योग में लिप्त अन्य वर्गों की दुर्गति हो गई।

दूसरे प्रथम विश्व युद्ध काल में एक सबसे बड़े बाजार जर्मनी में नाइट्रेट की आपूर्ति रुकने से जर्मन वैज्ञानिकों ने संश्लिष्ट (सिंथैटिक) नाइट्रेट की रचना कर ली और इस प्रक्रिया का अनुपालन बाद में अन्य पश्चिमी यूरोपीय देशों ने भी किया। इससे 1913-19 के दौरान चिली के नाइट्रेट में उत्पादन का हिस्सा 90 प्रतिशत से घटकर लगभग 24 प्रतिशत रह गया। फिर 1929-33 के व्यापक दबाव ने भी चिली नाइट्रेट उद्योग को हानि पहुँचाई। इस प्रकार चिली में काफी खदाने बंद हो गईं; लाखों श्रमिक बेरोज़गार हो गए तथा नाइट्रेट काल एकाएक समाप्त हो गया।

ख) ***सामाजिक प्रभाव***

1880 से नाइट्रेट उद्योग के तीव्र विकास ने चिली अर्थव्यवस्था और समाज पर व्यापक प्रभाव डाला। प्रथम तो इस उद्योग ने चिली के अन्य भागों से आप्रवास को प्रोत्साहित किया तथा क्षेत्र से बन्दरगाह तक ले जाने के लिए बन्दरगाहों का विकास एवं रेल मार्गों का निर्माण भी किया। तटीय और द्वीपीय केन्द्रों पर जल आपूर्ति के लिए जल की पाइप लाइनें डाली गईं। दूसरे इस उद्योग से टरपाका (चिली का एक विशेष शहर) की जनसंख्या 1885 से 1895 के बीच दो गुनी हो गई। तीसरे बंदरगाह वाले नगरों में सांस्कृतिक गतिविधियाँ बढ़ने से उत्कर्ष काल का वास्तविक आनंद रहा।

कुछ समीक्षकों का विचार है कि चिली में खनिज संसाधनों का विकास स्वयं चिली की अपेक्षा अमेरिका और ब्रिटेन के हितों के अधिक अनुकूल था। उदाहरण के लिए 1960 और 1970 के दशकों में चिली सरकारों ने पहली बार ताम्र उद्योग के मालिकों का राष्ट्रपति एड्यूराडो फेरई के अधीन चिली का राष्ट्रीयकरण कर दिया और अंत में चिली सरकार के सैनिक शासन में चरमोत्कर्श पर पहुँच गया।

उपरोक्त विचारधारा के विपरीत कुछ लोगों का विचार है कि विदेशी वित्तीय विकास के बिना देश का संपूर्ण उत्तरी भाग अनुपयोगी रहता तथा जनसंख्या का भी अभाव रहता। चिली के लिए उसके संसाधनों के बावजूद इस क्षेत्र से समन्वय करना एवं इस क्षेत्र को हथियाने के लिए पड़ोसी देशों के किसी प्रयास को विफल करना कठिन और बहुत खर्चीला होता। विदेशी संगठनों द्वारा संसाधनों के आर्थिक दोहन से चिली के क्षेत्र की संपूर्णता बनी रही तथा इसी से सुरक्षा के साधन भी प्रदान हुए।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि परिवर्तित होती बाजार संरचना या तकनीकी विकास तथा एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में गतिविधियों के स्थानान्तरित होने के परिणामस्वरूप विकास प्रक्रिया मध्य चिली में कृषि विकास और खाद्य उत्पादन से तथा उत्तर में नाइट्रेट खनन और फिर ताम्र खनन में स्थानान्तरित हो गई।

2.5 सारांश

निर्विवाद रूप से सत्य है कि लेटिन अमेरिका में संसाधनों की भरमार है। चूँकि यह कच्चा माल और खाद्यान्नों का बड़ा उत्पादक बन रहा था अतः अर्जेन्टीना और पैम्पास 1853-1930 के बीच विश्व पूंजीवादी व्यवस्था में शामिल हो गए थे। इसके बाद उत्पादकता के रूप में इसका गौरव कम होने लगा, घरेलू खपत बढ़ने के कारण अतिरिक्त निर्यात घटने लगा तथा विश्व बाजार की परिस्थितियाँ भी विपरीत हो गई। इसी प्रकार ब्राज़ील में आने वाले आर्थिक चक्रों में अल्पकालिक उत्कर्ष लेकिन दीर्घकालीन अपकर्ष रहा जिसका शेष अर्थव्यवस्था पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में चिली के नाइट्रेट उद्योग से पश्चिमी यूरोप का कृषि विकास हुआ लेकिन युद्ध काल में आपूर्ति बाधित हो गई और दबाव के वर्षों में संश्लिष्ट उर्वरक तथा

आपूर्ति के अन्य साधनों का विकास हुआ। इस प्रकार संकट के दो वर्षों तथा व्यापक दबाव की अवधि में इन तीन देशों से वस्तु निर्यात के आधार पर बहिरोन्मुख विकास स्वरूप की क्षमता के बारे में प्रश्न पैदा कर दिए। इस स्वरूप का केवल कुछ समय के लिए ही इन देशों की आर्थिक और सामाजिक संरचना पर मामूली प्रभाव पड़ा।

2.6 अभ्यास प्रश्न

1) 1853-1930 के दौरान यूरोपीय देशों के लिए खाद्य भण्डार के रूप में पैम्पास के उत्कर्ष और अपकर्ष की चर्चा कीजिए।

2) ब्राज़ील में आर्थिक चक्रों का उसकी अर्थव्यवस्था और समाज पर सीमित प्रभाव ही क्यों पड़ा?

3) खनिजों ने उन्नीसवीं शताब्दी में चिली अर्थव्यवस्था की रक्षा पंक्ति तैयार की। इस वक्तव्य की समीक्षा कीजिए।